7

कक्षा में बच्चों की सहज उपस्थिति एक प्रयास

राजन लाल*

प्रस्तुत लेख में कक्षा में बच्चों की सहज उपस्थिति से संबंधित विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई है। बाल्यकाल में बच्चे स्थानीय परिवेश की कहानियों, कविताओं, चित्रों एवं खेल गतिविधियों के माध्यम से अनुकूल वातावरण में सहज अधिगम प्राप्त करते हैं। कक्षा में बच्चों की सहज उपस्थिति के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए विभिन्न गतिविधियों जैसे कविता को लय, हाव-भाव के साथ गाना बच्चों को अधिगम वातारण के साथ जोड़ता है और बच्चे रुचिकर तरीके से अधिगम में प्रतिभाग करते हैं। बच्चे चित्रों के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को अभिव्यक्त करते हैं। बच्चों में मौखिक भाषा विकास के लिए अनुभव को साझा करना महत्वपूर्ण गतिविधि है जिसमें अध्यापक तथा बच्चे अपने-अपने अनुभवों को साझा करते हैं। इस प्रकार से बच्चे अपने आपको विद्यालयी वातावरण के साथ सहज कर पाते हैं।

शिक्षा मात्र किसी को कुछ सिखाने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि सच्ची शिक्षा तो वही है, जो बच्चे में जिज्ञासा पैदा कर सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ा सके। विद्यालयों में शिक्षकों का कर्तव्य है कि वे बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाएँ। अक्सर देखा जाता है कि कक्षा में बच्चों की उपस्थिति तो रहती है, मगर केवल शरीर से, मन से वे कहीं और विचरित रहते हैं। बच्चे अपनी कक्षा में मन से उपस्थित रहें और सचेत होकर अधिगम प्रक्रिया में भाग लें, उसके लिए कुछ सरल तरीके इस प्रकार हैं— कक्षा का वातावरण सौहाद्रपूर्ण, रुचिकर और रचनात्मक होगा तो बच्चे विद्यालय आने और उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित होंगे। उनकी रुचि और रचनात्मकता को संवेग प्राप्त होगा और सार्थक शिक्षा को हासिल करने के लिए अंतर्दृष्टि और अवसर प्राप्त हो सकेंगे। कक्षा के भौतिक परिवेश, सामाजिक और भावात्मक वातावरण का बच्चों की पढ़ाई पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। शिक्षकों के द्वारा अपने लिए और अपने बच्चों के लिए सकारात्मक वातावरण तैयार करने का काम कई प्रकार से किया जा सकता है और इस तरह

सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय बंसठी प्रथम, विकास खंड चौबेपुर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश 209 203

के सकारात्मक वातावरण सृजन के लिए निम्नलिखित बातों को समझना अनिवार्य है—

- सभी बच्चे जो सुनते हैं उसे अपने शब्दों में बता सकें, इसके लिए उन्हें अपनी भाषा में बोलने का अवसर दें।
- सभी बच्चे बिना डर के स्पष्ट बोल सकें, उन्हें इस तरह का स्वतंत्र माहौल देना है।
- सभी बच्चे चित्रों को देखकर उसके बारे में बता सकें, इसके लिए चित्र पठन जैसी गतिविधियाँ आयोजित करना ज़रूरी है।
- बच्चों से मित्रवत व्यवहार करना पहली अनिवार्य शर्त है।
- बच्चों को निर्भीकता के साथ प्रश्न करने की स्वतंत्रता हो।
- उन्हें विश्वास दिलाएँ कि वह अपने विचार बिना डर के बोल सकते हैं।
- कक्षा में स्फूर्तिपूर्ण खुशनुमा परिवेश होना जरूरी है।

कविता के माध्यम से सृजित सकारात्मक परिवेश

पानी बरसा छम-छम, छाता लेकर निकले हम।
पैर के नीचे कीचड़ आया, छाता ऊपर नीचे हम।।

यह एक बहुत ही प्रचलित कविता है। इस कविता को लय के साथ गाकर सुनाएँ। इसके बाद बच्चों के साथ दो-तीन बार हाव-भाव के साथ गाएँ, जिससे बच्चे कविता की लय और शब्दों से भलीभाँति परिचित हो जाएँ।

बरसात कविता पर आधारित गतिविधि से बच्चे वर्षा ऋतु से भलीभाँति परिचत हो जाएँगे और उन्हें मौसमों के बारे में भी जानकारी प्राप्त होगी। इस प्रकार मनोरंजक गतिविधि करने से बच्चे आगे कक्षा की पढ़ाई के लिए अनुकूल होंगे।

कविता पठन की गतिविधि

ब्लैकबोर्ड पर बरसात का चित्र बनाकर बरसात के पानी में बच्चे नाव बनाकर कैसे खेलते हैं; का अनुभव

कराया जाए और कविता को सुर, लय और हाव-भाव के साथ गाकर सुनाया जाए।

कविता पोस्टर पर कार्य

इस कविता को किसी पेपर या पुराने कैलेंडर के पीछे लिखकर बच्चों को प्रदर्शित किया जाए।

पोस्टर की कविता गाने के साथ बच्चों में प्रिंट चेतना भी आएगी। कविता पर काम करने के दौरान उनमें आए दो-तीन मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखकर और उसे एक छवि की तरह पढ़ने का अभ्यास बच्चों को कराया जाए, जैसे— छाता, पानी।

प्रिंट चेतना

बच्चों में यह समझ विकसित हो कि वे जो बोल रहे हैं उसे लिखा भी जा सकता है और जो लिखा गया है उसे पढ़ा भी जा सकता है। यही प्रिंट चेतना का हिस्सा है। इससे वे मौखिक और लिखित भाषा के संबंध तथा वाक्यों और उनकी विशेषताओं को भी समझने लगते हैं।

प्रतीकमय पठन

जब बच्चे लिखे हुए शब्दों कों अर्थपूर्ण चित्रों की तरह पहचानने लगते हैं तो वह प्रतीकमय पठन कहलाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में अलग-अलग प्रकार की लिखित सामग्री आती हैं, जैसे— कहानियों की किताबें, कविताएँ इत्यादि। शिक्षक उसे सामग्री के रूप में उपयोग करते हुए अलग-अलग गतिविधियाँ कराते हैं। तब धीरे-धीरे बच्चे उनमें लिखे गए कुछ चुनिंदा शब्दों को चित्र की तरह पहचानने लगते हैं। कविता पोस्टर पर कार्य करते समय बच्चों को चित्रों और लिखे हुए शब्दों या वाक्यों को देखने के लिए भी प्रोत्साहित किया जाए।

कविता पठन एवं गायन का महत्व एवं शैली

कविता पठन एवं गायन विभिन्न प्रकार के कौशलों के विकास का माध्यम है। इनमें सहानुभूति, भावबोध व सौंदर्य बोध होता है। बच्चों को कविता, गीत, लय और शब्दावली आकर्षित करती है। कई बार तो बच्चे कविता गीतों के शब्दों की खींच-तान कर रोचक प्रयोग भी करते हैं और ऐसा करने में उन्हें बहुत ही मज़ा आता है। शब्दों से खेलना, बच्चों की रचना शक्ति और उर्जा को बाहर लाने में अद्भुत भूमिका निभाता है।

कविता का महत्व

1. कविता में भाव तत्व की प्रधानता होती है।
2. कविता पाठक के मन को आसानी से छू जाती है।
3. कविता में सौंदर्य तथा भावना की सहज अभिव्यक्ति होती है।
4. कविता की लयात्मक शब्दावली पठन के लिए आकर्षित करती है।
5. कविता कल्पनाओं को उड़ान देती है।

कविता चित्रपठन

- कविता के चित्र पर चर्चा।
- कविता के माध्यम से बच्चों के स्वयं के अनुभवों पर चर्चा।

चित्र पर चर्चा

कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा करने के लिए चित्रों का उपयोग किया जाएगा। उसके लिए चार्ट में दिए गए चित्रों पर कार्य किया जाए।

चित्र पर चर्चा करने के चरण

- सभी बच्चों को अर्धगोले में शिक्षक के सामने चेहरा करके बिठाएँ। शिक्षक एवं बच्चे इतने समीप होने चाहिए कि सभी बच्चों को चित्र चार्ट स्पष्ट रूप से दिख रहा हो।
- बच्चों को चित्र-चार्ट देखने को कहा जाए एवं चार्ट से संबंधित सीधे, सरल एवं तथ्यात्मक प्रश्न पूछें, जैसे— इस चित्र में क्या दिख रहा है और इस चित्र में कौन-कौन है? ऐसे प्रश्नों को पूछे जाने से बच्चों को चित्र को समग्र रूप से देखने का मौका मिलता है एवं चित्र के विभिन्न पहलुओं पर भी उनका ध्यान जाता है।
- अब चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए अर्थ निर्माण के प्रश्न शामिल करें, जिससे बच्चों को अनुमान लगाने, कल्पना करने एवं अपने अनुभव साझा करने का मौका प्राप्त हों।

जैसे— तुम्हें कहाँ या किस समय का चित्र लगता है और क्यों? इस चित्र में यह लड़की क्या सोच रही है? यह लोग क्या बात कर रहे होंगे।

बच्चों के अनुभवों का साझाकरण

अनुभव पर चर्चा करना मौखिक भाषा विकास की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। बच्चों से उनके अनुभव सुनने से पहले शिक्षक अपने अनुभव साझा करें, उदाहरण के लिए— यदि बच्चों से उनकी दिनचर्या पर चर्चा कर रहे हैं तो बता सकते हैं कि वे दिनभर क्या-क्या करते हैं।

किसी एक दिन एक ही विषय से संबंधित अनुभवों पर चर्चा कर सकते हैं। यदि बच्चों को मज़ा आ रहा है और उनकी भागीदारी हो रही है तो एक विषय पर दो तीन दिन भी चर्चा की जा सकती है। इसके लिए निम्नलिखित विषय लिए जा सकते हैं—

1. बच्चों की दिनचर्या
2. खेल
3. मौसम (गर्मी या बरसात)
4. त्योहार
5. गाँव या घर या सड़क पर घटी घटना
6. यात्रा का अनुभव
7. मेले के अनुभव
8. दोस्तों के बारे में
9. खेत के काम
10. जानवर के बारे में
11. नृत्य एवं गायन के बारे में

अनुभव पर चर्चा करने के चरण

1. शिक्षक पहले किसी ऐसे एक विषय का चयन करें जो विषय बच्चों के स्तर एवं परिवेश वाले हों।
2. चयन किए गए विषय पर शिक्षक बच्चों के साथ थोड़ी बातचीत करके पूर्व-ज्ञान को सक्रिय करेंगे।
3. शिक्षक विषय से संबंधित अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा करेंगे। इससे बच्चों को अपने अनुभव को व्यवस्थित रूप में आकार देकर, दूसरों के साथ साझा करने में मदद मिलती है।

4. इसके बाद प्रत्येक बच्चे को अपने अनुभव कक्षा में सुनाने का अवसर प्रदान करें और कोशिश करें कि सभी बच्चों को पूरी चर्चा के दौरान कम से कम एक बार बोलने का अवसर अवश्य प्राप्त हो।

कविता पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य

लेखन कार्य से संबंधित गतिविधियों पर चर्चा करने के लिए लेखन कार्य क्या है एवं क्यों ज़रूरी है, इस पर बातचीत करना आवश्यक है। लिखने के बुनियादी कौशल, जैसे— अक्षर, मात्राएँ जोड़कर शब्द लिखने के साथ-साथ अपने शब्दों में अभिव्यक्ति और अर्थपूर्ण लेखन पर भी ध्यान देना आवश्यक है, जैसे— मनोरंजन या अपने विचार व्यक्त करने के लिए कुछ लिखना।

निष्कर्ष

कक्षा में बच्चों की सहज उपस्थिति के लिए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से अनुकूल वातावरण तैयार करने हेतु विभिन्न आयामों पर चर्चा की गई है। कक्षा का वातावरण सौहार्दपूर्ण, रुचिकर और रचनात्मक होता है तो बच्चे उद्देश्यपूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने एवं लिखने की आधारभूत दक्षताओं के विकास हेतु मित्रवत व्यवहार, प्रश्न पूछना, स्थानीय कहानियों एवं बच्चों के अनुभवों पर चर्चा, जैसे— बच्चों की दिनचर्या, खेल या गाँव या घर या सड़क पर घटित घटना, मौसम (गर्मी या बरसात) एवं घर या गाँव में पाए जाने वाले जानवरों इत्यादि की चर्चा से कक्षा में सहज उपस्थिति सुनिश्चित होती है।

संदर्भ

उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद्. 2020–21. *आधार शिला क्रियान्वयन संदर्शिका*. आस्टर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स प्रा.लि., मथुरा, उत्तर प्रदेश.